IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 8, June 2025
Impact Factor: 7.67

उच्च शैक्षणिक संस्थानों में अपशिष्ट प्रबंधन और पुनर्चक्रण

डॉ. शिवानी-सहायक

प्रोफेसर, हिंदी विभाग

श्री महावीर कॉलेज, सी-स्कीम, जयपुर

shivani_shrm@yahoo.com

अमूर्त

यह पेपर भारतीय उच्च शैक्षणिक संस्थानों (HEIs) में अपशिष्ट प्रबंधन और पुनर्चक्रण के लिए एक स्थायी प्रक्रिया कार्यप्रवाह स्थापित करने के लिए है। कोई भी HEI इन कार्यप्रवाह प्रक्रियाओं का पालन करके प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एक बंद-लूप प्रणाली बना सकता है। वे कार्यप्रवाह की कुशलता का परीक्षण करने में सक्षम होंगेI

उच्च शैक्षणिक संस्थानों (HEI) में अपशिष्ट प्रबंधन (WM) को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि वे अपने स्थिर लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। शैक्षणिक संस्थान नगरपालिका ठोस अपशिष्ट (एमएसडब्ल्यू) में प्रमुख योगदानकर्ता हैंI

जैसे कि जहां प्रतिदिन 12000 लोग आते हैं वहाँ लगभग 500 किलोग्राम प्रति दिन सब्जी और भोजन का कचरा (पकाया और कच्चा, बचा हुआ भोजन) और 8,000 किलोग्राम प्रति माह कागज, हार्डबोर्ड, पैकेजिंग सामग्री, कागज, प्लास्टिक, कपड़े, धूल, राख और विभिन्न प्रकार के दहनशील और गैर-दहनशील पदार्थ उत्पन्न होते हैं । ठोस अपशिष्ट उत्पादन के कारण संस्थानों के सामने आने वाली प्रमुख समस्याएँ हैं (i) कचरे को उचित तरीके से निपटाने की लागत, (ii) आसपास में कचरे के फैलाव के कारण नालियों का अवरुद्ध होना और (iii) मिट्टी में प्रदूषण I मूल चिंता का विषय स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर अपशिष्ट के प्रभाव में निहित है। परिणामस्वरूप प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन तकनीकों को अपनाने की अत्यधिक आवश्यकता है। उन उच्च शैक्षणिक संस्थानों के भीतर यह मुद्दा और अधिक जटिल हो जाता है, जहाँ विविध परिसर गतिविधियों होती रहती हैं जो उत्पादित कचरे की मात्रा को और बढ़ा देती है। अपशिष्ट पृथक्करण और निपटान के उचित तरीकों की कमी इस चुनौती को और बढ़ा रही है। अधिकांश पाठ्यक्रमों में अपशिष्ट प्रबंधन के तरीकों को विकसित और लागू किया जाना चाहिए I

अंत में, इस शोध पत्र का उद्देश्य है कि अपशिष्ट प्रबंधन कार्यप्रवाह को प्रत्येक शैक्षणिक संस्थानों की गतिविधियों के लिए उपयुक्त अपशिष्ट प्रबंधन योजना विकसित करने में मदद करे ।

संकेत शब्द :- अपशिष्ट, कार्यप्रवाह, योजना,पुनर्चक्रण ।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

ISSN 2581-9429 IJARSCT